Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ
حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ؕ
وَإِذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ
وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ⑬

(सूरः रअद : 12)

अनुवाद : वास्तव में, अल्लाह किसी कौम की स्थिति को तब तक नहीं बदलता जब तक कि वे स्वयं अपने जीवन में जो कुछ भी हो नहीं बदलते हैं, और जब अल्लाह किसी कौम के बुरे अंत का फैसला करता है, तो इसे किसी भी मामले में टालना संभव नहीं है, और उसके अतिरिक्त कोई सहायक नहीं है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक - 30

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

18 मोहर्रम , 1445 हिज्री कमरी, 25 वफ़ा 1403 हिज्री शम्सी, 25 जुलाई 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

ग़ज़व-ए-बनू नज़ीर के अस्बाब और हालात और वाक़ियात का प्रभावी वर्णन तथा पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक

"इस ग़ज़वा का कारण वर्णन करते हुए अरबाब-ए-हदीस व सैर-ए-मुख़्तलिफ़ में विभिन्न वजूहात वर्णन करते हैं और इस इख़तेलाफ़ की वजह से इस ग़ज़वा के समय के विषय में भी मतभेद पैदा हो गया है"(हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो)

हुई बिन अख़्तब ने कहा हे यहूद की जमाअत! मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अपने चंद साथियों के साथ तुम्हारे पास आए हैं। उनकी संख्या दस से भी कम है। इस घर के ऊपर से बड़ा पत्थर गिरा कर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को क़तल कर दो। तुम्हें इस से बेहतर अवसर पुनः नहीं मिलेगा। अगर उन्हें क़तल कर दिया तो उनके साथी बिखर जाऐंगे। मक्का से आए हुए उनके साथी वापस मक्का चले जाऐंगे और यहां केवल ओस और ख़ज़रज रह जाऐंगे जो तुम्हारे साथी हैं इसलिए तुम जो करना चाहते हो कर डालो।

अल्लाह तआला जलद पाकिस्तानी अहमदियों को भी इन ज़ालिमों से नजात दिलाए और वहां भी हमारे हालात बेहतर हों। छोटी-छोटी सी बात पर मुक़द्दमे और तंग करने की कोशिश की जाती है

श्रीमान ग़ुलाम सरवर साहिब शहीद पुत्र श्रीमान बशीर अहमद साहिब आफ़ सादुल्लाहपुर मंडी बहाउद्दीन, श्रीमान राहत अहमद बाजवा साहिब शहीद पुत्र श्रीमान मुश्ताक़ अहमद बाजवा साहिब आफ़ सादुल्लाहपुर मंडी बहाउद्दीन और श्रीमान मलिक मुज़फ़्फ़र ख़ान जोईआ साहिब कैनेडा का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

अल्लाह तआला इन शुहदा को जन्नतुल फ़िरदौस में आला मुक़ाम अता फ़रमाए, रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और समस्त पीछे रहने वालों को सब्र-ए-जमील अता फ़रमाए। उन्हें अपनी हिफ़ाज़त में रखे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 जून 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

ग़ज़वा बनू-नज़ीर का कुछ वर्णन करूँगा क़बीला बनू-नज़ीर का परिचय यह है कि बनू-नज़ीर मदीना के यहूद का एक ख़ानदान था। कुछ इतिहास के लेखकों ने लिखा है कि ये बनू-नज़ीर ख़ैबर के यहूद का एक क़बीला था और उनकी बस्ती को ज़ोहरा कहा जाता था।

(सीरत अल् हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 356 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मदीना तय्यबा तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त बनू-नज़ीर का सरदार हुय्या बिन अख्तब था। इसके पूर्वजों में छठी नसल में नज़ीर बिन् नहाम का नाम आता है जिसके नाम से यह क़बीला बनू-नज़ीर कहलाता है। उम्मुल मोमेनीन हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु अन्हा बनू-नज़ीर के उसी सरदार हई बिन अख़्तब की बेटी थीं। इतिहास की कुतुब में लिखा है कि हई बिन अख़्तब का सिल्सिला नसब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से जा मिलता है। हई के नसब में कई लोग नबियों के शरफ़ से नवाज़े गए जिन पर उसे गर्व था और इसी घमंड में ये कहा करता था कि अल्लाह तआला हम पर इस दुनिया में मेहरबान है और आख़िरत में भी वह हम पर शफ़क़त और मेहरबानी फ़रमाएगा। वह हमें गुनाहों की वजह से चंद दिन सज़ा देगा अंततः जन्नत ही हमारा ठिकाना होगा। इसी नसबी फ़ख़र और तकब्बुर के बायस हई ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीमात से रुगरदानी की थी।

क़बीला बनू-नज़ीर महल-ए-वक़ूअ के एतबार से मस्जिद क़बा से शुमाल

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

मशरिक़ की तरफ़ आधा मील दूर था और बीच मदीना से इसकी आबादी पहले आती थी और मस्जिद क़बा इस से थोड़े फ़ासले पर आगे जुनूबी जानिब थी।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 7 पृष्ठ 171-172 प्रकाशन बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

ग़ज़वा बनू-नज़ीर रबीउल-अव्वल चार हिज्री में पेश आया एक कथन यह है कि ग़ज़व-ए-उहद से पहले का वाक़िया है और इमाम बुख़ारी का कथन भी यही है। जबकि इमाम बुख़ारी ने इसी जगह यह भी लिखा है कि इब्न-ए-इसहाक़ के नज़दीक यह जंग उहद और बिर्रे मऊना के बाद हुई थी। जबकि अल्लामा इब्न-ए-कसीर और उनके अतिरिक्त अधिकतर इतिहास के लेखकों और सीरत निगारों ने कहा है कि ग़ज़वा बनू-नज़ीर ग़ज़वा उहद के बाद ही हुआ था।

(सीरत अल् हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 357 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान)

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी बाब हदीस बनू अल् नज़ीर आखिर)

ग़ज़वा बनू-नज़ीर के कारण के विषय में वर्णन हुआ है कि क़ुरैश मक्का ने ग़ज़व-ए-बदर से पहले अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल और ओस और ख़ज़रज के अन्य बुत परस्तों को लिखा। उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में थे कि तुमने हमारे साथी को पनाह दी है। मदीना में तुम्हारी संख्या सबसे ज़्यादा है। हम कसम खा कर कहते हैं कि या उनके साथ क़िताल करो या उन्हें अपने शहर से निकाल दो या फिर हम अरब को इकट्ठा करके तुम पर हमला-आवर हो जाऐंगे। तुम्हारे जंगजूओं के साथ जंग करेंगे। तुम्हारी औरतों और बच्चों को तलवार के नीचे कर देंगे। मक्का के कुफ़्फ़ार ने यह ख़त मदीना के सरदारोँ को लिखा। जब इब्न-ए-उबै और अन्य बुत परस्तों को ये ख़त मिला तो उन्होंने एक दूसरे की तरफ़ संदेश भेजा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के साथ जंग का पुख़्ता इरादा कर लिया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा की एक जमाअत के साथ उन्हें मिले अर्थात मदीना के सरदारोँ को। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरैश ने तुम्हें सख़्त धमकी आमेज़ ख़त लिखा है। यह ख़त तुम्हें किसी फ़रेब में ग्रस्त न कर दे कि तुम स्वयं को मकरो फ़रेब में ग्रस्त कर दो और तुम अपने ही भाईयों और बेटों से लड़ने लगो। जब उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह बात सुनी तो उन्हें यह बात समझ आ गई और उन्होंने अपने इरादे स्थगित कर दिए और मुंतशिर हो गए और यूं क़ुरैश-ए-मक्का की यह धमकी कारगर नहीं हुई।

फिर क़ुरैश ने ग़ज़ व-ए-बदर के बाद यहूद की तरफ़ एक ख़त लिखा कि तुम्हारे पास असलाह है और तुम क़िलों के मालिक हो। या तो तुम हमारे साथी के साथ क़िताल करो अन्यथा हम तुम पर चढ़ाई करेंगे और तुम्हारे मर्दों को क़तल कर देंगे और तुम्हारी औरतों को अपनी बांदियां बना लेंगे। जब ये ख़त यहूद तक पहुंचा तो बनू-नज़ीर ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ धोखा करने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया क्योंकि यहूद के क़बायल तो पहले ही चाहते थे कि कोई अवसर मिले और मुस्लमानों के तसल्लुत और ताक़त को जितना जल्द संभव हो ख़त्म किया जा सके। अब उन्होंने सोचा कि कोई ऐसा मन्सूबा किया जाए कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) क़तल कर दिया जाए। इसलिए उन्होंने आपकी तरफ़ संदेश भेजा कि आप तीस सहाबा के साथ तशरीफ़ लाएंगे। हमारे तीस उल्मा भी आपके पास हाज़िर होंगे यहां तक कि हम ऐसी जगह पर मिलें जो हमारे और तुम्हारे मध्य में हो। अर्थात कोई ऐसी जगह चुन लें जो मुशतर्का है। वे अर्थात उनके लोग आपका कलाम सुनेंगे। अगर उन्होंने अर्थात उन यहूदी उल्मा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ कर दी और आप पर ईमान ले आए तो हम भी आप पर ईमान ले आएँगे। दूसरे रोज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तीस सहाबा के साथ उनकी तरफ़ निकले। तीस यहूदी उल्मा भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ गए। जब यहूद खुले मैदान में निकले तो उन्होंने एक दूसरे से कहा। तुम उन पर कैसे हमला-आवर होगे हालाँकि आपके साथ तीस साथी हैं। इन तीस साथियों के साथ तो हमला--आवर होना मुश्किल है जो ऐसे साथी हैं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जान वार करने वाले हैं। इस पर यहूदियों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ यह संदेश भेजा कि हम साठ अफ़राद बाहम कैसे इफ़हाम-ओ-तफ़हीम करेंगे। आप ऐसा करें कि तीन साथियों को लेकर आएं और हम भी अपने तीन उल्मा ले आते हैं वे आपकी बातचीत सुनेंगे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन सहाबा के साथ आने की बात मान ली। तीन यहूदी उल्मा भी निकले। इन यहूदियों के पास ख़ंजर थे। वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला करना चाहते थे। बहरहाल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले जाने के लिए तैयार थे और रास्ते में ही थे कि बनू-नज़ीर की एक ख़ैर-ख़्वाह औरत ने एक अंसारी मुस्लमान को बनू-नज़ीर की इस सारी मंसूबा बंदी का बता दिया जो उन्होंने आपको धोखा देने का मन्सूबा किया था। और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर यहूद के इस इरादे से आगाह कर दिया और इससे पूर्व कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यहूद के पास पहुंचते आप मदीना वापिस तशरीफ़ ले आए।

(सिब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 317 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

इस ग़ज़वा का एक और कारण वर्णन करते हुए एक मुसन्निफ़ ने लिखा है कि बनू-नज़ीर ने ख़ुफ़ीया तौर पर क़ुरैश को संदेश भेजा और उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग करने पर उकसाया बल्कि उन्हें मुस्लमानों की चंद दिफ़ाई कमज़ोरियाँ भी बतलाई थीं। यह उस वक़्त की बात है जब क़ुरैश मुस्लमानों से जंग करने के लिए उहद के पास ख़ेमा-ज़न हुए थे। यह कारण केवल मूसा बिन अक़बा ने वर्णन किया है। कुछ रिवायत के मुताबिक़ जंग-ए-उहद से पहले यहूद ने भी क़ुरैश-ए-मक्का को ख़ूब भड़काया था जिसके नतीजा में जंग-ए-उहद बरपा हुई थी।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 7 पृष्ठ 175-176 मतबूआ बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

इस ग़ज़वा का एक अहम और फ़ौरी कारण यह भी वर्णन किया जाता है कि बिर्रे मऊना से वापसी पर जब हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़म बनू आमिर के दो अफ़राद को क़तल किया था जिनके साथ मुस्लमानों का अनुबंध था और अब उनकी दीयत का मआमला था। इस सिलसिला में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू-नज़ीर के पास तशरीफ़ ले गए थे।

(सीरत अल् हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 357 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान)

क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूद से जो अनुबंध किया था उसका एक शक़ यह भी थी कि أَنْ يُعَاوِنُوْهُ فِي الدِّيَاتِ अर्थात वे लोग दियत के मुआमलात में मुस्लमानों से सहयोग करेंगे।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 7 पृष्ठ 172 प्रकाशन बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

इस वाक़िया की तफ़सील जैसा कि पहले बिर्रे मऊना की तफ़सील में भी वर्णन हो चुकी है यह है कि हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़म्री रज़ियल्लाहु अन्हो बिर्रे मऊना से वापिस मदीना तशरीफ़ ला रहे थे। जब कनात स्थान पर पहुंचे। कनात मदीना और उहद के दरमयान मदीना की तीन मशहूर वादियों में से एक वादी है जहां खेती बाड़ी होती थी, तो बनू आमिर में से दो लोग उनको मिले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके साथ अनुबंध कर रखा था। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने से उनका नसब पूछा तो इन दोनों ने अपना नसब बताया। ये दोनों अफ़राद उनके साथ ही रहे। फिर जब वे दोनों सो गए तो हज़रत अम्र बिन अमय ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन पर हमला किया और उन्हें मौत के घाट उतार दिया। फिर जल्द ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा

वाक़िया सुनाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुमने बहुत बुरा किया। उनका हमारे साथ अनुबंध और अमान थी। हज़रत अम्र बिन अमय्या ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया मुझे इस मुआहिदे का इलम नहीं था। मैं उन्हें मुशरिक समझता था। उनकी क़ौम ने हमारे साथ दग़ा किया था। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो उनका सामान और कपड़े भी साथ ले आए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें, उनके परिजनों को उनका सामान और कपड़े वापस करने का हुक्म दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये चीज़ें उनकी दियत के साथ भेज दीं। इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हफ़्ता के रोज़ बनू-नज़ीर की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। मस्जिद क़बा में नमाज़ अदा फ़रमाई। मुहाजेरीन और अंसार में से कुछ सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू-नज़ीर के हाँ पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दस से भी कम सहाबा थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी महफ़िलों में बैठे हुए पाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठ गए ताकि उनके साथ बातचीत करें कि वे इन दो आदमियों की दियत अदा करने में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद करें जिन्हें हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़तल था।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 318 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

(फरहंग-ए-सीरत पृष्ठ 239 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची)

इस ग़ज़वे के अस्बाब के विषय में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी लिखा है जिससे कुछ और वज़ाहत होती है कि :

"इस ग़ज़वा का कारण वर्णन करते हुए अरबाब-ए-हदीस मुख़्तलिफ़ वजूहात वर्णन करते हैं और इस इख़तेलाफ़ की वजह से इस ग़ज़वा के ज़माना के विषय में भी इख़तेलाफ़ पैदा हो गया है।

हज़रत मियां साहिब लिखते हैं कि इब्न-ए-इसहाक़ और इबन-ए-साद जिनकी इत्तिबा में इस जगह बिना किसी ख़ास तहक़ीक़ के इख़तेयार की है। ग़ज़वा बनू-नज़ीर को ग़ज़वा उहद और वाक़िया बिर्रे मऊना के बाद वर्णन करते हैं और इस का कारण यह लिखते हैं कि अमरो बिन उमय्या ज़म्री जिन्हें कुफ़्फ़ार ने बर्रे मऊना के अवसर पर क़ैद करके छोड़ दिया था। वे जब वापिस मदीना की तरफ़ आ रहे थे तो उन्हें रास्ता में क़बीला बनू आमिर के दो आदमी मिले जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अनुबंध कर चुके थे। चूँकि अम्र को इस अनुबंध का इलम नहीं था इसलिए उसने अवसर पाकर इन दो आदमियों को शुहदा बर्रे मऊना के बदले में क़तल कर दिया जिनके क़तल का बायस क़बीला बनू मरवान का एक रईस आमिर बिन तुफ़ैल हुआ था। जबकि ख़ुद क़बीला बनू आमिर के लोग इस क़तल इत्यादि से दस्त कश थे।" उन्होंने जंग नहीं की थी लेकिन बहरहाल उनको यह था कि उसने धोखा किया है इस लिए उन्होंने समझा कि यह हमारे दुश्मन हैं और क़तल कर दिया। "जब अम्र बिन अमय मदीना पहुंचे तो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सारा माजरा अर्ज़ किया और उन दो आदमियों के क़तल का वाक़िया भी सुनाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब इन दो आदमियों के क़तल की सूचना हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अम्र बिन अमय के इस फ़ेअल पर बहुत नाराज़ हुए और फ़रमाया कि वह तो हमारे मुआहिद थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ौरन उन हर दो मक़्तूलीन का ख़ून बहा उनके विरसा को भिजवा दिया लेकिन चूँकि क़बीला बनू मरवान के लोग बनू-नज़ीर के भी हलीफ़ थे और बनू-नज़ीर मुस्लमानों के साथी थे इसलिए अनुबंध की दृष्टि से इस का ख़ून बहा का हिस्सा रसदी बनू-नज़ीर पर भी था।" क्योंकि उनका बनू-नज़ीर के साथ आपस में अनुबंध था और मुस्लमानों के साथ भी था तो उन्होंने बहरहाल कुछ हिस्सा इस में share करना था। कुछ हिस्सा उन्होंने भी देना था "इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम' इस वजह से "अपने चंद सहाबियों को साथ लेकर बनू-नज़ीर की आबादी में पहुंचे और उनसे यह सारा वाक़िया वर्णन करके ख़ून बहा का हिस्सा मांगा। कि ग़लती से यह इस तरह क़तल किया है और इस की दियत देनी चाहिए। हम अपना हिस्सा भी देते हैं और तुम्हारा भी हमारे साथ अनुबंध है इसलिए तुम भी अपना हिस्सा दो।

फिर लिखते हैं कि " .. यह वह रिवायत है जिसकी अधिकतर इतिहास के लेखकों ने इत्तिबा की है। यहाँ तक कि यही रिवायत इतिहास में आम तौर पर शाय और मुतआरिफ़ हो गई है, लेकिन इसके मुक़ाबिल पर इमाम ज़ुहरी की यह रिवायत सही अहादीस में मर्वी हुई है कि जंग-ए-बदर के बाद परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि ख़ास तौर पर किस साल और किस माह में मक्का के सरदारों ने बनू-नज़ीर को यह ख़त लिखा था कि तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग करो अन्यथा हम तुम्हारे ख़िलाफ़ जंग करेंगे। इस पर बनू-नज़ीर ने बाहम मश्वरा करके यह फ़ैसला किया कि किसी हिकमत अमली के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल कर दिया जाए और इसके लिए उन्होंने यह तजवीज़ की कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी बहाना से अपने पास बुलाऐं और वहां अवसर पाकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल कर दें। इसलिए उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कहला भेजा कि हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अपने उल्मा का मज़हबी तबादला ख़्यालात करवाना चाहते हैं। अगर हम पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त ज़ाहिर हो गई तो हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आएँगे। अतः आप मेहरबानी करके अपने कोई से तीस अस्हाब को साथ लेकर तशरीफ़ ले आएं। हमारी तरफ़ से भी तीस उलमा होंगे और फिर बाहम तबादला ख़्यालात हो जाएगा। एक तरफ़ तो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह संदेश भेजा और दूसरी तरफ़ यह तजवीज़ पुख़्ता करके उसके मुताबिक़ पूरी पूरी तैयारी कर ली कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाएंगे तो यही उल्मा" जिनके पास ख़ंजरें पोशीदा हों अवसर पाकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल कर दें।

क़बीला बनू-नज़ीर की एक औरत ने एक अंसारी शख़्स को जो रिते में इस का भाई लगता था अपने क़बीला वालों के इस बद इरादे से बर वक़्त सूचना दे दी।

और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो अभी घर से निकले ही थे यह सूचना पाकर वापस तशरीफ़ ले आए और फ़ौरन तैयारी का हुक्म दिया और सहाबा की एक जमाअत को साथ लेकर बनू-नज़ीर के क़िलों की तरफ़ रवाना हो गए और जाते ही उनका मुहासिरा कर लिया और फिर उनके सरदारों को संदेश भेजा कि जो हालात ज़ाहिर हुए हैं उनके होते हुए मैं तुम्हें मदीना में रहने नहीं दे सकता। जब तक कि तुम पुनः मेरे साथ अनुबंध करके मुझे यक़ीन न दिलाओ कि आइन्दा तुम अनुबंध नहीं तौड़ोगे और ग़द्दारी नहीं करोगे। परंतु यहूद ने अनुबंध करने से साफ़ इंकार कर दिया और इस तरह जंग का आरंभ हो गया और बनू-नज़ीर निहायत विद्रोही ढंग पर किलाबंद हो कर गए।" अर्थात बड़ी सरकशी दिखाते हुए और तकब्बुर दिखाते हुए क़िला बंद हो के बैठ गए कि हमारे पास ताक़त है। "दूसरे दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह सूचना मिली या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पाठकों से स्वयं मालूम कर लिया कि यहूद का दूसरा क़बीला बनू क़ुरैज़ा से भी कुछ बिगड़ बैठा है। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा के एक दस्ता को साथ लेकर बनू क़ुरैज़ा के क़िलों की तरफ़ रवाना हुए और उनका घेराव कर लिया। बनू करेज़ा ने जब देखा कि राज़ खुल गया है तो वे डर गए और माफ़ी मांगने वाले हो कर पुनः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अमन शांति और आपसी सहयोग का अनुबंध कर लिया। जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका घेराव उठा लिया और फिर बनू-नज़ीर के क़िलों की तरफ़ तशरीफ़ ले आए लेकिन बनू-नज़ीर बदस्तूर अपनी ज़िद और दुश्मनी पर अड़े रहे और एक नियमित जंग की सूरत पैदा हो गई।

ये वे दो अलग अलग रिवायतें हैं जो ग़ज़वा बनू-नज़ीर के कारण के विषय में वर्णन की गई हैं और जबकि तारीख़ी दृष्टि से बाद में वर्णित रिवायत

ज़्यादा दरुस्त और सही है और दूसरी अहादीस में भी ज़्यादा-तर इसी रिवायत की ताईद पाई जाती है लेकिन चूँकि पहली रिवायत को इतिहास के लेखकों ने ज़्यादा कसरत के साथ क़बूल किया है और कुछ सही अहादीस में भी इसकी सेहत की तरफ़ इशारा पाया जाता है। इसलिए इमाम बुख़ारी ने

बावजूद ज़ुहरी के कथन को तर्जीह देने के क़बीला आमिर के दो मक़्तूलों की दियत का भी वर्णन किया है। इसलिए हमारी राय में अगर दोनों रिवायतों को सही समझ कर मिला लिया जाए तो कोई हर्ज लाज़िम नहीं आता। जबकि इस से ग़ज़वा के ज़माना के विषय में उन रिवायतों में से किसी एक रिवायत को तर्जीह देनी पड़ेगी। क्योंकि ज़माना के लिहाज़ से हर दो रिवायात को सही तस्लीम नहीं किया जा सकता। ऐसा मालूम होता है कि बनू-नज़ीर की तरफ़ से मुख़्तलिफ़ अवसरों पर मुख़्तलिफ़ अस्बाब जंग के पैदा होते रहे हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें ढील देते रहे और दरगुज़र से काम फ़रमाया। लेकिन जब आख़िरी कारण बिर्रे मऊना के वाक़िया के बाद हुआ, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें उनकी सारी कार्यवाहियां जतला कर उन के ख़िलाफ़ फ़ौजकशी फ़रमाई। गोया ये जितने मुख़्तलिफ़ अस्बाब वर्णन हुए हैं ये सब अपनी अपनी जगह दरुस्त थे परंतु आख़िरी कारण वह था जो बनू मरवान के दो मक़्तूलों की दियत के मुतालिबा के वक़्त पेश आया। 'وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب' यह सारा वर्णन जो मैंने किया है यह सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में से लिया है

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 522 से 525)

फिर लिखा है कि बनू-नज़ीर की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने की नापाक साज़िश भी थी। यह भी एक वजह बनी थी। इस बारे में जैसा कि वर्णन हो चुका है कि दियत के सिलसिला में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा की एक जमाअत के साथ बनू-नज़ीर के हाँ तशरीफ़ ले गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हफ़्ते के दिन निकले। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजेरीन और अंसार की एक जमाअत के साथ मस्जिद क़बा में नमाज़ अदा की। फिर हसब-ए-अनुबंध बनू-नज़ीर के पास जा कर दियत की मांग की।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 38 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हि)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने जिन अस्हाब के साथ तशरीफ़ ले गए उनकी संख्या दस से कम थी। इस रिवायत में यह लिखा है। उनमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो , हज़रत उसैद बिन हुज़ेर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत साद बिन उबादः रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम भी मिलते हैं।

(किताब अल् मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 309 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2003 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहां पहुंच कर यहूद से दियत की बात की तो उन्होंने कहा कि हाँ हाँ अबुल् क़ासिम। आप पहले खाना खा लीजिए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के काम की तरफ़ आते हैं। इसी तरह यहूदियों ने ज़ाहिरी तौर पर तो बड़ी ख़ंदापेशानी से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बात की लेकिन दरपर्दा वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल की मंसूबा बंदी कर रहे थे। उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके घरों की एक दीवार के साय में बैठे हुए थे। यहूद ने आपस में मश्वरा किया और कहने लगे कि उन्हें अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़त्म करने के लिए तुम्हें इस से बेहतर अवसर नहीं मिलेगा इसलिए बताओ कौन है जो इस मकान की छत पर चढ़ कर दीवार पर से एक बड़ा पत्थर आपके ऊपर गिरा देता कि हमें आपसे नजात मिल जाए।

(सीरत अल् हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 357 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान)

एक और मुसन्निफ़ यह वाक़िया वर्णन करते हुए लिखता है कि उनके सरदार हुई बिन अख़तब ने कहा हे यहूद की जमाअत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अपने चंद साथियों के साथ तुम्हारे पास आए हैं। उनकी संख्या दस से भी कम है। इस घर के ऊपर से बड़ा पत्थर गिरा कर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को क़तल कर दो। तुम्हें इस से बेहतर अवसर पुनः नहीं मिलेगा। अगर उन्हें क़तल कर दिया तो उनके साथी बिखर जाऐंगे। मक्का से आए हुए उनके साथी वापस मक्का चले जाऐंगे और यहां केवल ओस और ख़ज़रज रह जाऐंगे जो तुम्हारे मित्र हैं इसलिए तुम जो करना चाहते हो अभी कर डालो।

इस पर एक बद-बख़्त यहूदी अम्र बिन हज्जाश बोला मैं इस घर पर चढ़ कर पत्थर गिरा कर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) क़तल करूँगा। जब ये सारी मुशावरत हो रही थी उस वक़्त बनू-नज़ीर के एक सरदार सल्मा बिन मिश्कन ने कहा हे यहूद की जमाअत तुम बेशक सारी ज़िंदगी मेरी मुख़ालेफ़त कर लेना लेकिन आज मेरी बात मान लो। अल्लाह की क़सम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को तुम्हारे इस इरादे की ख़बर कर दी जाएगी और यह हमारे और उनके दरमयान मुआहिदे की ख़िलाफ़वरज़ी होगी। लेकिन यहूद ने इस की एक नहीं सुनी और अपने अज़म पर क़ायम रहे

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 39-40 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हि)

और फिर जो अगली कार्रवाई है कि क्या क्या उन्होंने, किस तरह क़तल का इरादा किया और किस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने बचाया और उनके मन्सूबों को नाकाम बनाया। वह मैं इंशा अल्लाह तआला आइन्दा करूँग

पर मैं पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी विशेषता दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। इन पर आजकल फिर सख़्तियां वारिद की जा रही हैं। अल्लाह तआला जलद पाकिस्तानी अहमदियों को भी इन ज़ालिमों से नजात दिलाए और वहां भी हमारे हालात बेहतर हों। ज़रा ज़रा सी बात पर मुक़द्दमे और तंग करने की कोशिश की जाती है।

जुमा के बाद में जनाज़े भी पढ़ाऊंगा। इस में पहले उनका वर्णन कर दूँ पहला वर्णन है श्रीमान ग़ुलाम सरवर साहिब शहीद पुत्र श्रीमान बशीर अहमद साहिब का और इस के साथ ही दूसरा वर्णन राहत अहमद बाजवा साहिब पुत्र श्रीमान मुश्ताक़ अहमद बाजवा साहिब का होगा जो सादुल्लाह पूर ज़िला मंडी बहाउदीन के रहने वाले थे जिन को 8 जून को शहीद कर दिया गया था। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

एक अहमदियत के दुश्मन ने एक के बाद एक फ़ायर करके ग़ुलाम सरवर साहिब और राहत बाजवा साहिब को शहीद किया था। शहादत के समय ग़ुलाम सरवर साहिब शहीद की उम्र चौंसठ साल जबकि राहत बाजवा साहिब शहीद की उम्र बत्तीस साल थी। तफ़सीलात के मुताबिक़ ग़ुलाम सरवर साहिब शहीद अहमदिया मस्जिद सादुल्लाह पूर से नमाज़ ज़ुहर की अदायगी के बाद अपने घर वापिस जा रहे थे कि घर के क़रीब एक अहमदियत के दुश्मन सय्यद अली रज़ा जो मुक़ामी मुदर्रिसा का विद्यार्थी था उसने ग़ुलाम सरवर साहिब का पीछा करके पिस्तौल से फ़ायर कर दिया। सिर में गोली लगने से आप स्थान पर ही शहीद हो गए। घटना के बाद क़ातिल स्थान से चला गया और गांव की दूसरी जानिब जा कर एक और अहमदी श्रीमान राहत अहमद बाजवा साहिब को भी फ़ायर कर के शहीद कर दिया जिसके बाद क़ातिल की गिरफ़्तारी अमल में आई। घटना के बाद क़ातिल ने पुलिस को अपने इक़रारी वर्णन में बताया कि हाँ मैंने उनको मारा है। उसने यह कार्रवाई जन्नत के हुसूल के लिए की है। कहने लगा कि मैं ने तो जन्नत हासिल करने के लिए सब कुछ किया है। अगर मुझे कोई और अहमदी भी नज़र आ जाता तो मैं उस की जान लेने से भी गुरेज़ नहीं करता।

तो मौलवियों के सिखाए हुए इस्लाम की तालीम का लोगों पर तो यह

असर है। यह इस्लाम की तालीम दे रहे हैं और इस्लाम को बदनाम करने वाले हैं।

अल्लाह तआला उनकी जल्द पकड़ के सामान फ़रमाए ग़ुलाम सरवर साहिब शहीद इब्न बशीर अहमद साहिब के ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पड़दादा हज़रत शरफ़ुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के द्वारा से हुआ जिन्हों ने ताऊन के निशान से प्रभावित हो कर सादुल्लाह पूर के अन्य अहबाब के हमराह हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजीकी रज़ियल्लाहु अन्हो के माध्यम से बज़रीया ख़त बैअत की थी। बाद में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के 1903 ई. में मुक़द्दमा जहलम के अवसर पर जहलम तशरीफ़ लाने पर उनकी ज़ियारत की सआदत भी मिली।

शहीद मरहूम बफ़ज़ल-ए-ख़ुदा निज़ाम-ए-वसीयत में शामिल थे। पंजगाना नमाज़ बाजमाअत के पाबंद, तहज्जुद गुज़ार थे। दुरूद शरीफ़ बहुत ज़्यादा कसरत से करने वाले, नफ़ली रोज़ों के अतिरिक्त तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से विशेषतः शग़फ़ था। इस के अतिरिक्त जमाती कुतुब का मुताला बाक़ायदगी से करते थे और नफ़ल रोज़ाना का उनका मामूल था। जमाअत के लिए दो नफ़ल बाक़ायदगी से पढ़ा करते थे। रोज़ाना की बुनियाद पर सदक़ा दिया करते थे। पर्दापोशी के साथ मुस्तहक़्क़ीन की मुआवनत करते थे। कभी किसी सवाली को घर से ख़ाली नहीं जाने देते थे। मुक़ामी जमाअत में जनरल सैक्रेटरी के अतिरिक्त उन्हें बतौर मुरब्बी अतफ़ाल सादुल्लाहपुर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम को दावत इल्लाह का बहुत शौक़ था। कई सईद रूहों को आपके माध्यम से बैअत की तौफ़ीक़ मिली। भूतकाल में कलिमा मुहिम के दौरान अन्य अहबाब के साथ तीन चार दिन के लिए बग़ैर मुक़द्दमा दर्ज किए उनको जेल मे कैद होने का भी सौभाग्य मिला।

क़ायद ज़िला शाहिद इमरान हैं, मरहूम के भतीजे भी हैं, कहते हैं कि शहीद मरहूम बार-बार इस ख़्वाहिश का इज़्हार किया करते थे कि अल्लाह तआला मुझे किसी ऐसे काम की तौफ़ीक़ दे जिसकी बदौलत जमाअत अहमदिया के इतिहास में मेरा नाम सुनहरे शब्दों में लिखा जाए। अल्लाह तआला ने उनकी यह ख़्वाहिश इस तरह पूरी कर दी।

पीछे रहने वालों में पत्नी श्रीमाना साजिदा प्रवीण साहिबा के अतिरिक्त दो बेटे और चार बेटियां शामिल हैं। उनकी दो छोटी बेटियां हैं जो एक एफ़ एस सी में तालीम हासिल कर रही है और एक मैट्रिक में। बाक़ी बच्चे तो शादीशुदा हैं। इताअत का जज़्बा कहते हैं उनमें कमाल का था। सदर जमाअत ने वर्णन किया कि उनकी शहीद मरहूम के साथ रिश्तेदार भी थी और कभी--कभार उनसे रंजिश भी हो जाती थी। आपस के ताल्लुक़ात में बातों में ऊंच नीच हो जाती है परंतु जब जमाती मुआमला आता तो ये कहते कि आप सदर जमाअत हैं। जो बात भी आप कहेंगे उस की कामिल पाबंदी करूँगा। यह एक नमूना था जो उन्होंने दिखाया। लोगों की बहुत सारी शिकायतें आती हैं कि अपने ज़ाती रंजों की आधार पर जमाती निज़ाम से सहयोग नहीं करते लेकिन उन्होंने कभी यह इज़्हार नहीं होने दिया। कामिल इताअत के साथ इंतेज़ामीया की इताअत है।

मलिक अमानुल्लाह साहिब मुरब्बी ज़िला कहते हैं कि मेरा ग़ुलाम सरवर साहिब के बारे में मुशाहिदा यह रहा कि मस्जिद में हमेशा पहले आकर पहली सफ़ में दाएं तरफ़ बैठ जाते। ज़िक्र-ए-इलाही में व्यस्त रहते। निहायत आजिज़ और मुनकसिरुल मिज़ाज इन्सान थे। ख़िलाफ़त से ख़ास मुहब्बत थी। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद की कुतुब का मुताला का भी ज़ौक़ रखते थे और तब्लीग़ का भी शौक़ था। इसलिए हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह की मजालिस-ए-इर्फ़ान और अन्य आडीयो वीडीयो अपने पास रखते थे और बड़े शौक़ से सुना करते थे और देखा करते थे। एक मुरब्बी ने लिखा कि मैंने ख़ाब में देखा था कि मस्जिद पर हमला हुआ है और मैं शहीद हो गया हूँ अर्थात मुरब्बी। तो मुरब्बी साहिब ने यह ख़ाब जब उनको सुनाई तो शहीद मरहूम कहने लगे: मुरब्बी साहिब देखते हैं पहले आप शहीद होते हैं या मैं। यह भी लगता है कि उनको पहले कोई इशारा मिला था जिस की वजह से उन्होंने यह बात कही। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी नसल में भी उनकी नेकियां जारी रखे और कामिल वफ़ा से उनको रहने की तौफ़ीक़ दे।

दूसरा ज़िक्र श्रीमान राहत अहमद बाजवा साहिब शहीद का है। यह मुश्ताक़ अहमद बाजवा साहिब के बेटे थे। तफ़सीलात के मुताबिक़ राहत बाजवा साहिब सादु ल्लाहपुर बस स्टॉप पर वाक़्य अपने पकवान सैंटर से वापस अपने घर आ रहे थे कि मज़कूरा क़ातिल सय्यद अली रज़ा ने उन पर भी पिस्टल से फ़ायर कर दिया। सिर में गोली लगने से आप भी अवसर पर शहीद हो गए। राहत अहमद बाजवा साहिब शहीद के ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा श्रीमान रशीद अहमद साहिब के ज़रीया हुआ जिन्हों ने अपने भाई श्रीमान हफ़ीज़ुल्लाह साहिब के ज़रीया 1978 ई. में बैअत की थी। शहीद मरहूम अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से निज़ाम-ए-वसीयत में शामिल थे। जब भी किसी अहमदी की शहादत की उन्हें सूचना मिलती तो रशक से इस बात का इज़्हार करते कि यह रुत्बा तो क़िस्मत वालों को मिलता है। ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से वालेहाना इशक़ था। मेहमान--नवाज़ी का वस्फ़ नुमायां था। निहायत हँसमुख इन्सान थे। हर किसी से मुहब्बत से पेश आते। अगर कोई मनफ़ी रवैय्या इख़्तेयार करता तो इस का जवाब मुसबत रवैय्ये से देते। 2018 ई. में कादियान गए तो हर वक़्त मस्जिद में या बैतददुआ में दुआओं में ही व्यस्त रहे। जब भी जमाती ख़िदमत के लिए बुलाया जाता फ़ौरी तौर पर सब काम छोड़ के हाज़िर हो जाते। जमाती प्रोग्रामज़ के ज़िमन में मेहमानान के लिए स्वयं खाना तैयार करते क्योंकि उनकी अपनी खाने की दुकान थी। उनकी एक ख़्वाहिश थी कि वक़्फ़ करके दारुल ज़याफ़त में जाएं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत करें।

उनके एक कज़न जामिआ में पढ़ते हैं। कहते हैं मुझे जब भी मिलते हमेशा यह नसीहत करते कि कभी बेवफ़ाई न करना और आख़िर दम तक अपने वक़्फ़ को निभाना। तभी तुम हमारे ख़ानदान की इज़्ज़त का बायस बनोगे।

शहीद मरहूम ने पीछे रहने वालों में माता पिता के अतिरिक्त पत्नी अम्तुल नूर साहिबा और दो बेटियां अज़ीज़ा ज़ुवेरिया उम्र चार साल और अज़ीज़ा ज़मल राहत डेढ़ साल यादगार छोड़े हैं। अल्लाह तआला इन शुहदा को जन्नतुल फ़िरदौस में आला मुक़ाम अता फ़रमाए। रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और जुमला पीछे रहने वालों को सब्र-ए-जमील अता फ़रमाए। उन्हें अपनी हिफ़्ज़-ओ-अमान में रखे।

इस के साथ एक और जनाज़ा श्रीमान मलिक मुज़फ़्फ़र ख़ान जोया का है। पिछले दिनों दिनों 93 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। आपके बेटे मुहम्मद मुतीउल्लाह जोई साहिब आजकल हवाई (Hawaii) में मुरब्बी सिलसिला हैं और ट्रैवल डाकूमैंट्स न होने की वजह से वालिद के जनाज़े में और तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके। मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि वालिद साहिब निहायत दीन-दार, मुत्तक़ी, ग़रीबपर्वर, तहज्जुद गुज़ार, पांचोंवक्त नमाज़ों के पाबंद और बाक़ायदा तिलावत क़ुरआन-ए-करीम बातर्जुमा करने वाले एक नेक और मुख़्लिस इन्सान थे। चौबीस साल की उम्र में 1953 ई. में उन्होंने स्वयं अहमदियत क़बूल की। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़बूल करने से उनमें एक इन्क़लाबी तबदीली आई और इस वक़्त से उन्होंने ख़ुदा तआला की इबादत, ख़िलाफ़त से वफ़ा और इन्सानियत की ख़िदमत की मिसाली ज़िंदगी बसर की। आपको ज़िंदगी में मुख़्तलिफ़ हैसियतों में जमाअत की ख़िदमत का भी अवसर मिला। पंद्रह वर्ष तक अपनी चकआफ़ 152 शुमाली सरगोधा में सदर जमाअत भी रहे। कहते हैं आपसे हमने कभी किसी जमाती ओहदेदार के बारे में शिकवा या शिकायत नहीं सुनी। हमेशा नसीहत करते कि कोई जमाती ओहदेदार चाहे सायक ही हो अगर तुम्हारे घर आए तो ख़लीफ़-ए-वक़्त के नुमाइंदा होने की हैसियत से इसकी इज़्ज़त-ओ-इकराम तुम पर वाजिब है। स्वयं भी अमलन हमेशा जमाती मेहमानों और ओहदेदारों का ख़ास एहतेराम करते थे।

2005 ई. में जब मैंने वसीयत की तहरीक की थी तो यह तो पहले ही मूसी

थे। कहते कि किस तरह मैं इस तहरीक पर लब्बैक कहूं इसलिए उस वक़्त उन्होंने अपनी वसीयत को 101 से बढ़ा के 31 कर दिया। शरह बढ़ा दी। सब बच्चों को कहते थे कि माली क़ुर्बानी और चंदा हक़ीक़त में वही होता है जो इन्सान पहले ही अदा करे और सैक्रेटरी माल को याद्देहानी का अवसर ही न दिया जाए। ख़ुद भी जब पैंशन आती थी इस मैं सबसे पहले चंदाजात अदा करते थे। कहते हैं कि 1990 ई. की दहाई में हमारी जमाअत को मुरब्बी हाऊस की ज़रूरत पड़ी तो अपनी ज़मीन जो मस्जिद के नज़दीक और गांव के अंदर वाक़्य थी जमाअत को बिना संकोच किए अतीया दी।

अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician, Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigerator, Diesel Mechanic, Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198

(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान

27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

ख़ुत्बः जुमअः

बनू-नज़ीर की जानिब से नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने की नाकाम साज़िश और ग़ज़व-ए-बनू नज़ीर के अस्बाब का तफ़सीली वर्णन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला ने यहूद के इस बद इरादे से वह्यी के माध्यम से सूचना दे दी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जल्दी से वहां से उठ आए

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया कि बनू नज़ीर के यहूद के पास जाओ और उनसे कहना मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हारी तरफ़ यह संदेश देकर भेजा है कि तुम उनके शहर निकल जाओ।

सलाम बिन मिश्कम ने हुई बिन अख्तब से कहा : ख़ुदा की कसम तू भी जानता है और तेरे साथ हम भी जानते हैं कि वह अल्लाह तआला के सच्चे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। उनके औसाफ़ हमारे हाँ मौजूद हैं।

अगर हम उनकी इत्तिबा न करें तो इस की वजह यह है कि हम उनसे हसद करते हैं क्योंकि नबुव्वत बनू हारून से निकल चुकी है। आओ हम उनके अता करदा अमन को स्वीकार कर लें।

सलाम बिन मिश्कम ने हुई बिन अख्तब से कहा अब्दुल्लाह बिन उबैय के क़ौल की कोई हैसियत नहीं। वह तुझे हलाकत के गढ़े में फेंकना चाहता है यहां तक कि तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग करे। वे अपने घर में बैठा रहेगा और तुझे छोड़ देगा।

हुई ने अपने भाई जुददी बिन अख़्तब को दूत बना कर भेजा कि जाओ मुस्लमानों के क़ायद को बता दो कि हम यहां से नहीं जाऐंगे जो कर सकते कर लो

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया حَارَبَتِ الْيَهُوْدُ अर्थात यहूद ने जंग का ऐलान कर दिया है

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 जून 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने की बनू नज़ीर जो यहूदियों का एक क़बीला था उनकी साज़िश थी, उसका वर्णन हो रहा था। पिछले दिनों ख़ुतबा में मैं ने बताया था कि इस की तफ़सील वर्णन करूँगा कि किस तरह अल्लाह तआला ने उनके मंसूबे को नाकाम किया जो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल का था।

इस बारे में लिखा है कि वह्यी के ज़रीया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को साज़िश का इल्म हुआ और इस की तफ़सील यूं वर्णन हुई है कि अम्र बिन जहश़ जब छत के ऊपर पहुंच गया ताकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पत्थर फेंके तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यहूदियों की साज़िश की बज़रीया वह्यी ख़बर हो गई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जल्दी से अपनी जगह से उठे और अपने साथियों को वहीं बैठा छोड़कर इस तरह रवाना हो गए जैसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई काम है। और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेज़ी से वापस मदीना तशरीफ़ ले गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो यही समझे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी हाजत के लिए तशरीफ़ ले गए हैं लेकिन जब कुछ देर हो गई तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़िक्र हुई और वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलाश में उठे। रास्ते में उनको मदीना से आता हुआ एक शख़्स मिला। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में पूछा तो उस ने कहा कि मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मदीना में दाख़िल होते देखा था। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौरन मदीना आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे। तब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को बताया कि बनू नज़ीर ने क्या साज़िश की थी।

(सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 357 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2008 ई.)

दूसरी तरफ़ अभी यहूद आपस में मश्वरा ही कर रहे थे कि एक यहूदी मदीना से आया। जब उसने अपने साथियों को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में बाहम मुशावरत करते सुना तो उसने कहा तुम क्या करना चाहते हो? उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को क़तल कर दें और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा को गिरफ़्तार कर लें। उसने पूछा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) कहाँ हैं? उन्होंने कहा यह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम) हैं जो क़रीब ही दूसरी जगह बैठे हुए हैं। उनके साथी ने उन्हें कहा कि मैं ने तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा वह मदीना में दाख़िल हो रहे थे। इस पर वे हैरान रह गए।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 318 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

एक और सीरत निगार ने इस बारे में लिखा है कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वापसी में कुछ देर हो गई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि हमारे यहां रुके रहने से कोई फ़ायदा नहीं। निसंदेह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई हुक्म आ गया है। इसलिए वे सब वहां से चलने लगे तो यहूद का सरदार हुई बिन् अखतब कहने लगा कि अबुल् क़ासिम ने जल्दी की है। हम तो खाने की तैयारी कर रहे थे और दियत के लिए मुशावरत कर रहे थे। उन्हें खाना खिला कर आपकी ज़रूरत पूरी करना चाहते थे। फिर जब सहाबा करामऊ मदीना की तरफ़ वापस आ रहे थे तो उन्हें एक आदमी मिला। उन्होंने इस से पूछा क्या तुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा है? उसने बताया कि मेरी अभी अभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात हुई है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में दाख़िल हो रहे थे। सहाबा कराम वहां पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़र्मा थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से तशरीफ़ ले आए और हमें मालूम ही नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

هَمَّتِ الْيَهُوْدُ بِالْغَدْرِ بِيْ. यहूद ने मेरे साथ धोखा का इरादा किया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह्यी इलाही के मुताबिक़ जल्द तशरीफ़ ले गए। सहाबा कराम को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसलिए कुछ नहीं बताया कि वे ख़तरे की ज़द में नहीं थे। यहूद का असल हदफ़ केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात थी। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम संतुष्ट थे कि मेरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो न केवल महफ़ूज़-ओ-मामून रहेंगे बल्कि वे मेरी तलाश में जल्दी निकल आएँग।

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 07 पृष्ठ 40-41मक्तबा दारुल रियाज़ 1435 हि)

कहते हैं उस वक़्त यह आयत भी नाज़िल हुई कि

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ۔

(अल् मायद : 12) (सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ : 319 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने ऊपर अल्लाह की नेअमत को याद करो। जब एक क़ौम ने पुख़्ता इरादा कर लिया था कि वे तुम्हारी तरफ़ अपने शर के हाथ लंबे करेंगे परंतु उसने तुमसे उनके हाथों को रोक लिया और अल्लाह से डरो और चाहिए कि अल्लाह ही पर मोमिन तवक्कुल करें।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में लिखा है कि "उन्होंने अर्थात यहूद ने "बज़ाहिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तशरीफ़ लाने पर ख़ुशी का इज़हार किया और कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ रखें। हम अभी अपने हिस्सा का रुपया अदा किए देते हैं। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चंद अस्हाब के एक दीवार के साया में बैठ गए और बनू नज़ीर बाहम मश्वरा के लिए एक तरफ़ हो गए और ज़ाहिर यह किया कि हम रुपय की फ़राहमी का इंतेज़ाम कर रहे हैं लेकिन बजाय रुपय का इंतेज़ाम करने के उन्होंने यह मश्वरा किया कि यह एक बहुत ही अच्छा अवसर है। मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) मकान के साया में दीवार के साथ लगे बैठे हैं कोई शख़्स दूसरी तरफ़ से मकान पर चढ़ जाए और फिर एक बड़ा पत्थर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊपर गिरा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का काम तमाम कर दे" नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। "यहूद में से एक शख़्स सलामा बिन मिश्कम ने इस तजवीज़ का विरोध किया और कहा कि यह एक ग़द्दारी का फ़ेअल है और इस अह्द के ख़िलाफ़ है जो हम लोग मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ कर चुके हैं। परंतु उन लोगों ने नहीं माना और अंततः अम्र बिन जहश नामी एक यहूदी एक बहुत भारी पत्थर लेकर मकान के ऊपर चढ़ गया और क़रीब था कि वह इस पत्थर को ऊपर से लुढका देता। परंतु रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला ने यहूद के इस बद इरादे से बज़रीया वह्यी सूचना दे दी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जल्दी से वहां से उठ आए।

और ऐसी जल्दी में उठे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्हाब ने भी और यहूद ने भी ये समझा कि शायद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी हाजत के ख़्याल से उठ गए हैं। इसलिए वे संतोष के साथ बैठे हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंतेज़ार करते रहे लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से उठकर सीधे मदीना में तशरीफ़ ले आए। सहाबा ने थोड़ी देर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंतेज़ार किया लेकिन जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापिस तशरीफ़ नहीं लाए तो वे घबरा कर अपनी जगह से उठे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इधर उधर तलाश करते हुए अंततः स्वयं भी मदीना पहुंच गए। इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को यहूद की इस ख़तरनाक साज़िश की खबर दी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 523)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जाने के बाद की तफ़सील में यहूदियों के रवैय्ये के बारे में लिखा है कि यहूद अपने किए पर बहुत शर्मिंदा थे। एक यहूदी किनानह बिन सोविय या सोरिया ने कहा। क्या तुम लोग जानते हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यहां से क्यों उठकर चले गए हैं? उन्होंने कहा अल्लाह की क़सम हमें तो मालूम नहीं तुम्हें कुछ पता है तो बता दो। उसने कहा तौरात की क़सम बिला-शुबा मैं जानता हूँ कि मुहम्मद को ख़बर कर दी गई है जो तुमने उसके साथ धोखा का इरादा किया। इसलिए तुम अब मज़ीद अपने आपको धोखा में ना रखो। अल्लाह की क़सम बला-शुबा वह अल्लाह के रसूल हैं और वे उठे भी इसलिए हैं कि उन्हें वह्यी के माध्यम से बता दिया गया है कि तुम धोखा-देहियों से काम लेना चाहते थे। निसन्देह वह आख़िरी नबी हैं। तुम चाहते थे कि आख़िरी पैग़ंबर हारून की नसल से आए लेकिन अल्लाह तआला ने जहां से चाहा उन्हें मबऊस फ़रमाया। निसन्देह हमारी किताबें जिन्हें हम तौरात में पढ़ते हैं वे तबदील नहीं हुईं। उनमें यह लिखा हुआ है कि इस नबी की पैदाइश मक्का में होगी और वह यसरिब अर्थात मदीना में हिज्रत करेगा। इसकी जो सिफ़ात हमारी किताब तौरात में वर्णन की गई हैं केवल और केवल उन पर सादिक़ आती हैं। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हें खून खराबे के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। तुम अपने अम्वाल, जायदादें और बच्चे रोते बिलकते छोड़ जाओगे। अगर तुम मेरी बात मान लो तो तुम्हारा शरफ़-ओ-वक़ार रहेगा।

मेरी दो बातें मान लो अन्यथा तीसरी बात में भलाई नहीं है।

उन्होंने कहा वे दो बातें क्या हैं? उसने कहा कि पहली बात यह कि तुम इस्लाम क़बूल करके मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी बन जाओगे तो तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी औलाद महफ़ूज़ रहेगी और तुम लोग उनके ऊंचे मुक़ाम वाले साथियों में से बन जाओगे और अपने घरों से निकाले नहीं जाओगे। यहूद ने किनान बिन सोरिया की बात का यह उत्तर दिया कि हम तौरात और अह्द मूसा को नहीं छोड़ेंगे। किनान ने कहा दूसरी बात यह है कि तुम लोग इंतेज़ार करो। अनक़रीब वह तुम्हें हुक्म देगा कि तुम मेरे शहर से निकल जाओ। इस पर तुम लोग कहना हाँ। फिर वह तुम्हारे ख़ून और तुम्हारे माल अपने लिए हलाल नहीं बनाएगा और तुम्हारे माल और जायदादें तुम्हारे लिए छोड़ देगा। चाहो तो बेच दो और चाहो तो अपने पास रख लो। उन्होंने कहा कि हाँ हम उसके लिए तैयार हैं। सल्लाम बिन मिश्कम ने कहा तुम लोगों ने जो कहा मैं मजबूर हो कर तुम्हारे साथ इस में शरीक

हुआ। वह अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अब हमें संदेश भेजने वाला है कि तुम इस इलाक़े से निकल जाओ। हे हुई! इस की बात के सामने पस-ओ-पेश न करना। उस सरदार को कहा। और ख़ुशी से जलावतनी क़बूल कर लेना और इस के शहर से निकल जाना। इस पर हुई ने कहा कि मैं ऐसा ही करूँगा और इस जगह से चला जाऊँगा।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 319 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 42-43 प्रकशन अस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

मदीना पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन साज़िशों के विषय में क्या कार्रवाई फ़रमाई।

इस बारे में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूद की जलावतनी का हुक्म फ़रमाया लेकिन उन्होंने फ़ैसला मानने से इंकार किया। जबकि शुरू में यही लिखा है लेकिन बाद में उनका इरादा बदल गया और उन्होंने मुक़ाबले की ठानी। इसकी मज़ीद तफ़सील इस तरह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना पहुंचने के बाद हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हो को बुला भेजा। वे आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि :

बनू नज़ीर के यहूद के पास जाओ और उनसे कहना मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हारी तरफ़ यह संदेश देकर भेजा है कि तुम उनके शहर से निकल जाओ।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 42-43 प्रकाशन अस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हो बनू नज़ीर के पास पहुंच कर कहने लगे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हारी तरफ़ एक संदेश देकर भेजा है लेकिन वे सुनाने से पहले मैं तुम्हें एक बात याद दिलाता हूँ जिसका तुम सबको इलम है। उन्होंने पूछा वह कौन सी बात है? मुहम्मद बिन मसल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा तुम्हें तौरात का वास्ता देकर पूछता हूँ जिसे अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल किया। तुम्हें याद होगा कि क़बल अज़ इस्लाम में एक रोज़ तौरात लेकर आया और तुम्हारे सामने पेश की। तुमने कहा खाना-खाना चाहते हो तो खिलाएं। यहूदी बनना चाहते हो तुम्हें यहूदी बना देंगे। मैं ने कहा था कि अगर खाना खिलाओगे तो खालूँगा। यहूदी बनने के लिए कहोगे तो यह असंभव है। फिर तुमने एक तश्त में खाना पेश किया और पूछा कि तुम यहूदी मज़हब क़बूल क्यों नहीं करना चाहते? क्या तुम इब्राहीमी दीन के मुतलाशी हो? क्या अबू आमिर राहिब दीन-ए-इब्राहीमी का अनुयाई नहीं है? इस धर्म वाला नबी हमारे पास आने वाला है जिसकी यह निशानियां हैं। वह हँसमुख होगा। सच्चाई के दुश्मनों को मलियामेट करने वाला होगा। इसकी आँखें सुर्ख़ी माय होंगी। वहयमन की तरफ़ से आएगा। ऊंट पर सवार होगा। सिर पर इमामा बांध रखा होगा। सूखी रोटी के टुकड़े पर इकतेफ़ा करने वाला होगा। इसकी गर्दन से तलवार लटकी होगी और वह हिक्मत-ओ-दानाई की बातें करेगा। यहूद ने कहा तुमने सब निशानियां दरुस्त बताई हैं। हमने यह बातें तुमसे की थीं लेकिन ये अलामतें उस शख़्स अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में नहीं हैं। इस पर मुहम्मद बिन मस्लाम रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा जो बात में तुम्हें याद कराना चाहता हूँ वह यही थी। अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का संदेश सुन लो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जो अनुबंध तुम्हारे साथ किया गया था तुमने धोखा बाज़ी कर के उसे तोड़ दिया है। अम्र बिन जहश ने छत पर चढ़ कर पत्थर फेंकने का सोचा था जिसके विषय में अल्लाह तआला की तरफ़ से अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बाख़बर कर दिया गया है। तुमने अह्द शिकनी की है। ये बात सुनकर उन पर सकता तारी हो गया। मुहम्मद बिन मस्लाम रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का संदेश सुनाते हुए कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने है : أُخْرُجُوا مِنْ بَلَدِيْ فَقَدْ أَجَّلْتُكُمْ عَشْرًا فَمَنْ رُئِيَ بَعْدَ ذَالِكَ ضَرَبْتُ عُنُقَهُ अर्थात तुम मेरे शहर से निकल जाओ मैं तुम्हें दस दिन की मोहलत देता हूँ। अगर उसके बाद कोई शख़्स नज़र आया तो मैं उस की गर्दन मार दूँगा। यहूद ने कहा हम यह तस-व्वुर भी नहीं कर सकते थे कि ओस क़बीले के किसी शख़्स से हम इस तरह की बात सुनेंगे। तुम तो हमारे हलीफ़ थे। मुहम्मद बिन मस्लम रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अब दिल बदल गए हैं। ओस और ख़ज़रज के दिलों में यहूद से मुहब्बत थी परंतु इस्लाम के बाद अब वहां अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का संदेश सुनकर यहूद ने जला वतनी की तैयारी शुरू कर दी। बनू नज़ीर को चंद दिनों की मोहलत दे दी गई तो वह जलावतन होने की तैयारियां करने लगे। उनकी सवारियां ज़द मुक़ाम पर चरागाह में मौजूद थीं। ज़द क़बा के नवाह में मदीना से छः से आठ मील दूरी पर एक चरागाह थी। यह उन्हें वापस लाने लगे उन्होंने क़बीला अशजा से कुछ ऊंट बतौर क़र्ज़ लेने का मुतालिबा किया।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 7 पृष्ठ 179-180 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

(फरहंग-ए-सीरत पृष्ठ 85 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

यहूद वहां से निकलने की तैयारियों में थे कि इस दौरान रईसुल् मुनाफ़े-कीन अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सलूल ने एक चाल चली और उस की इस चाल की वजह से उनके इरादे बदल गए। जिसकी तफ़सील में इतिहास में लिखा है कि यहूद अपनी तैयारी में व्यस्त थे कि उनके पास अब्दुल्लाह बिन उबैय का संदेश आया। सुवैद और दाइस यह संदेश लेकर आए कि अब्दु-ल्लाह बिन उबैय कह रहा है कि अपने घरों से न निकलो। अपने अम्वाल न छोड़ो। अपने क़िलों में ठहरे रहो। मेरे पास अपनी क़ौम और अन्य अहल-ए-अरब के दो हज़ार जवान मौजूद हैं वे तुम्हारे साथ तुम्हारे क़िलों में दाख़िल हो जाऐंगे। उनका आख़िरी शख़्स मर जाएगा लेकिन मुस्लमानों को तुम तक नहीं पहुंचने देंगे। बनू क़ुरैज़ा भी तुम्हारी मदद करेंगे। तुम्हें रुस्वा नहीं करेंगे। बनू ग़त्फ़ान में से तुम्हारे हलीफ़ भी तुम्हारी मदद करेंगे और अगर तुम यहां से निकलने पर मजबूर हो गए तो हम भी तुम्हारे साथ ही यहां से चले जाऐंगे।

अल्लाह तआला ने मुनाफ़ेक़ीन की इस चालबाज़ी और मक्कारी को क़ु-रआन-ए-मजीद में भी वर्णन फ़रमाया है और यह वर्णन करते हुए फ़रमाया है कि

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ۔

(अल् हशर : 12)

क्या तू ने उनकी तरफ़ नज़र नहीं दौड़ाई जिन्हों ने नफ़ाक़ किया। वह अहल-ए-किताब में से अपने भाईयों से जिन्हों ने कुफ़्र किया कहते हैं कि अगर तुम निकाल दिए गए तो तुम्हारे साथ हम भी ज़रूर निकलेंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी की इताअत नहीं करेंगे और अगर तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ाई की गई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम भाग 7 पृष्ठ 180 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

(अल् इक्तफा भाग 2 पृष्ठ 110आलेमुल् कुतुब बेरूत)

अब्दुल्लाह बिन उबै ने बनू क़ुरैज़ा के कइ बिन असद कुर्ज़ी की तरफ़ संदेश भेजा कि वे अपने साथियों की मदद करे। उसने कहा हम में से एक शख़्स भी यह अनुबंध तोड़ने पर राज़ी नहीं। उसने इंकार कर दिया। अब्दु-ल्लाह बिन उबै बनू करेज़ा से मायूस हो गया। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और बनू नज़ीर के दरमयान मुआमलात में शिद्दत पैदा करना चाहता था। वह लगातार हुई की तरफ़ संदेश भेजता रहा। हुई ने कहा कि मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की तरफ़ यह संदेश भेज रहा हूँ कि हम अपने घरों से नहीं निकलेंगे। हम अपने अम्वाल नहीं छोड़ेंगे। वे

जो चाहें करलें। हुई, अब्दुल्लाह बिन उबैय की बातों में आ गया। सल्मा बिन मिश्अस ने हुई से कहा कि हुई तेरे नफ़्स ने तुझे धोखा दे रखा है। अगर मुझे यह अंदेशा नहीं होता कि तेरी राय को अहमक़ समझा जाएगा तो मैं अपने इताअत गुज़ार यहूदियों के साथ तुझे छोड़ देता। हुई इस तरह न कर। उसे कहा बख़ुदा तू भी जानता है और तेरे साथ हम भी जानते हैं कि वह अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं। उनके औसाफ़ हमारे हाँ मौजूद हैं। अगर हम उनकी इत्तिबा नहीं करें तो इस की वजह यह है कि हम उनसे हसद करते हैं क्योंकि नबुव्वत बनू हारून से निकल चुकी है। आओ हम उनके अता करदा अमन को क़बूल लें।

हम उनके शहर से निकल जाएं। तू भी जानता है कि तू ने उनके साथ धोखा करने में मेरी मुख़ालेफ़त की है। जब हम यहां से चले जाऐंगे और जब फल पक जाऐंगे तो हम आएँगे या हम में से एक अपने फल के पास आएगा उसे बैच देगा या उसके साथ जो चाहेगा करेगा फिर हमारे पास आ जाएगा। तो गोया कि हम अपने शहर से निकले ही नहीं क्योंकि हमारे अम्वाल हमारे हाथों में होंगे। हमारी क़ौम पर हमारा शरफ़ हमारे अम्वाल और अफ़आल की वजह से है। जब अम्वाल हमारे हाथों से चले जाऐंगे तो फिर हम ज़िल्लत में दूसरे यहूद की तरह हो जाऐंगे लेकिन अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी तरफ़ आए और अगर उन्होंने एक दिन भी हमारे इस क़िला का घेराव कर लिया फिर वे इस संदेश को क़बूल नहीं करेंगे जो उन्होंने अभी भेजा है और वे उस का इंकार कर देंगे। हुई बिन अखतब ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तब ही हमारा मुहासिरा करेंगे जब उन्हें अवसर मिलेगा अन्यथा वह वापिस चले जाऐंगे। तुमने देखा नहीं कि अब्दुल्लाह बिन उबेय ने भी मेरे साथ वाअदा किया है।

सलाम बिन मिशकम ने कहा अब्दुल्लाह बिन उबैय के क़ौल की कोई हैसियत नहीं। वह तुझे हलाकत के गढ़े में फेंकना चाहता है यहां तक कि तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग करे। वे अपने घर में बैठा रहेगा और तुझे छोड़ देगा।

अब्दुल्लाह बिन उबैय ने काब से मदद मांगी थी परंतु काब ने इंकार कर दिया था। काब ने कहा था कि बनू क़ुरैज़ा का एक शख़्स भी इस अह्द को नहीं तोड़ेगा जबकि मैं ज़िंदा हूँ। अब्दुल्लाह बिन उबैय ने अपने हलीफ़ बनू क़ेनक़ाअ के साथ भी इसी तरह का वादा किया था। उन्होंने भी जंग करने की कोशिश की। अह्द को पस-ए-पुश्त डाला। स्वयं को अपने क़िलों में कैद कर दिया। वह अब्दुल्लाह बिन उबैय की मदद का इंतेज़ार करते रहे जबकि वे अपने घर में बैठा रहा। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी तरफ़ गए और उनका घेराव कर लिया यहाँ तक कि वे उनका हुक्म मानने पर मजबूर हो गए।

इब्ने उबैय ने तो अपने हलीफ़ों की मदद नहीं की थी हमने तो अपनी तलवारों के साथ ओस के साथ उसके साथ तमाम जंगों में शिरकत की है। अब तो जंग का वह सिलसिला ख़त्म हो चुका है। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ला चुके हैं और उनके दरमयान अर्थात जंगों के दरमयान रोक डाल दी गई है। इब्ने उबैय न यहूदी है न मुस्लमान। न ही अपनी क़ौम के दीन पर है। हम उस की बात कैसे क़बूल कर लें। हुई ने कहा कि मैं तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अदावत ही करता रहूंगा और उनके साथ क़िताल ही करता रहूँगा। सलमा ने कहा फिर तो हम अपनी सरज़मीन से जिलावतन हो जाऐंगे। हमारे अम्वाल और हमारा शरफ़ ख़त्म हो जाएगा। हमारे बच्चे क़ैदी बन जाऐंगे और हमारे जंगजू क़तल कर दिए जाऐंगे। परंतु हुई ने इंकार कर दिया सिवाए उसके कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग करेगा।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 320 से 321 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

सारूक बिन अबी हुकेक जो यहूद की क़ौम का एक बूढ़ा व्यक्ति था और कम अक़्ल प्रसिद्ध था उसने भी कहा कि हे हुई तू मनहूस आदमी है। तो बनू नज़ीर को हलाक कर देगा। हुई ग़ज़बनाक हो गया। उसने कहा बनू नज़ीर का हर आदमी बात कर रहा है यहाँ तक कि ये पागल और बेवक़ूफ़ आदमी भी मुझे मलामत कर रहा है। सारूक को उस के भाईयों ने मारा और हुई से कहा हम तुम्हारे हुक्म के अधीन हैं। हम हरगिज़ तुम्हारी मुख़ालेफ़त नहीं करेंगे।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 7 पृष्ठ 45 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1435 हि)

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 7 पृष्ठ 181 बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई)

फिर हुई ने अपने भाई जुदय बिन अख़्तब को एलची बना कर भेजा कि जाओ मुस्लमानों के क़ायद को बता दो कि हम यहां से नहीं जाऐंगे जो कर सकते हो कर लो।

जुदय ने मदीना पहुंच कर हुई का संदेश सुनाया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ तशरीफ़ फ़र्मा थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस की बात सुनी तो बुलंद आवाज़ में अल्लाहु-अकबर कहा और मुस्लमानों ने भी नारा-ए-तकबीर बुलंद कर दिया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया حَارَبَتِ الْيَهُوْدُ। अर्थात यहूद ने ऐलान जंग कर दिया है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू नज़ीर की इन कार्यवाईयों और ऐलानिया जंग के जवाब में बनू नज़ीर पर चढ़ाई करने का ऐलान किया तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उसी वक़्त तैयारियों में व्यस्त हो गए। यहूद का यही क़ासिद जुदय बिन अख़्तब फ़ौरन अब्दुल्लाह बिन उबी के घर पहुंचा और उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ होने वाली गुफ़्तगु और अहवाल के विषय में बताया। यह घर में अपने दोस्त अहबाब से ख़ुश गपियों में मगन था। उसने कहा जाओ में अपने हलीफ़ों को संदेश भेजता हूँ वह तुम्हारे साथ क़िलों में दाख़िल हो जाऐंगे। इस एलची ने देखा कि इब्ने अबी के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह ज़िरह पहने और तलवार थामे इस्लामी लश्कर में शमूलियत के लिए दौड़े जा रहे हैं। इस पर जुदय्य सहयोग से नाउम्मीद हो गया। यह तुरंत हुई के पास आया और उसे समस्त रुवेदाद वर्णन की कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हारी बात सुनकर कहा कि यहूद ने आलान-ए-जंग कर दिया है। फिर नारा-ए-तकबीर बुलंद करते हुए तैयारी का ऐलान कर दिया है। उसे फिर भी एतबार नहीं आया। कहने लगा यह तो उनकी जंगी चाल थी। हुई ने पूछा कि अब्दुल्लाह बिन उबैय ने क्या कहा? तो उसने इब्ने उबैय के साथ बातचीत के बारे में बताया कि वह कहता है कि मैं अपने हलीफ़ों को संदेश भेज देता हूँ वह तुम्हारे साथ क़िलों में पहुंच जाते हैं। जुदय ने कहा भाई में तो इस की मदद से नाउम्मीद हूँ।

उधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़िलों का मुहासिरा करने के लिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म सादर फ़रमाया।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहग 7 पृष्ठ 181-182 बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में लिखा है कि "क़बीला ओस के एक रईस मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाकर फ़रमाया कि तुम बनू नज़ीर के पास जाओ और उन के साथ इस मुआमला के विषय में बातचीत करो और उन से कहो कि चूँकि वे अपनी शरारतों में बहुत बढ़ गए हैं और उनकी ग़द्दारी इंतिहा को पहुंच गई है इसलिए अब उनका मदीना में रहना ठीक नहीं है। बेहतर है कि मदीना को छोड़ कर कहीं और जा कर आबाद हो जाएं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दस दिन का समय निर्धारित फ़रमाई है। मुहम्मद बिन मुस्लिमा जब उनके पास गए तो वे सामने से बड़े से बड़े तकब्बुर से "पेश आए

और कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से कह दो कि हम मदीना से निकलने के लिए तैयार नहीं हैं। तुमने जो करना हो कर लो। जब उनका यह जवाब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बेसाख़ता फ़रमाया। "अल्लाहु-अकबर यहूद तो जंग के लिए तैयार बैठे हैं उसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को तैयारी का हुक्म दिया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमईयत को साथ लेकर बनू-नज़ीर के ख़िलाफ़ मैदान में निकल आए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 523-524)

रियासत के इन सरकश बागियों की सरकूबी के लिए जो रियासत के सरदार को क़तल करने के भयानक मंसूबे भी कर चुके थे। क्योंकि उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रियासत सरदार थे और अब बजाय नदामत के वे हथियारबंद हो कर ऐलान-ए-जंग कर चुके थे तो मदीना को एक बड़ी ख़ूँरेज़ी से बचाने और मदीना के दिफ़ा के लिए इन बागियों का सद्द-ए-बाब करना ज़रूरी हो चुका था। लिहाज़ा जब समस्त मुस्लमान जमा हो गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके साथ निकले। इस अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में हज़रत इब्ने मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हो को अपना क़ायमक़ाम निर्धारित फ़रमाया। हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ेमा दिया कि उसे बनू नज़ीर के क़िलों के सामने नसब किया जाए। ये ख़ास लक्कड़ी का था, कुछ ने उसे चमड़े का बताया है। जंगी पर्चम हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने उठाया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लश्कर-ए-इस्लाम के साथ आगे बढ़े यहां तक कि शाम के क़रीब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू नज़ीर की बस्ती में पहुंच कर पड़ाव किया और वहां खुले मैदान में अस्र की नमाज़ अदा फ़रमाई। उधर यहूद अपनी हवेलियों में क़िला बंद हो गए थे और क़िलों के ऊपर खड़े हो कर तीर और पत्थर बरसाने लगे। जब इशा का वक़्त हो गया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ के बाद दस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ वापस अपने घर मदीना तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िरह पहने हुए थे और घोड़े पर सवार थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लश्कर का अमीर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को बनाया और एक क़ौल है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया। बहरहाल मुस्लमानों ने रात इस हालत में गुज़ारी कि वे यहूद का मुहासिरा किए हुए थे और बार-बार तकबीर के नारे बुलंद करते रहे यहां तक कि सुबह का उजाला होने लगा तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ज्र की अज़ान दी। उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ वापस लश्करगाह में तशरीफ़ ले आए जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। यहूद में से एक शख़्स का नाम अज़वक् था। कुछ जगह उस का नाम ग़ज़ूल वर्णन हुआ है। यह शख़्स बड़ा माहिर तीर-अंदाज़ था और इस का फेंका हुआ तीर बहुत दूर तक जाता था। उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ेमे का निशाना लेकर तीर मारा। वह तीर ख़ेमे पर आ लगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ेमे को वहां से हटा कर तीर अंदाज़ों से दूर उसे नसब करने का आदेश दिया।

(सीरतुल् हलबिया भाग 2 पृष्ठ 359 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2008 ई.)

(किताब अल्मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 314 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2003 ई.)

फिर रात हो गई। न अब्दुल्लाह बिन उबैय बनू नज़ीर के पास आया और न ही उस का कोई हलीफ़ उनके पास आया और वह अपने घर में बैठा रहा। बनू नज़ीर उसकी मदद से मायूस हो चुके थे। सलाम बिन मिशकम और किनानह बिन सोविय हुई से कहने लगे कि इब्ने अबी की वे मदद कहाँ गई जो तू गुमान करता था। हुई ने कहा अब मैं क्या करूँ। ये हलाकत है जो हमारे मुक़द्दर में लिख दी है।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 322 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

इसी दौरान एक रात इशा के क़रीब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो लश्कर में से ग़ायब पाए गए तो लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अली रज़ियल्लाहु अन्हो कहीं नज़र नहीं आ रहे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उनकी फ़िक्र न करो क्योंकि वे तुम्हारे ही एक काम से गए हैं। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो उस शख़्स का सिर काट कर ले आए जिसका नाम अज़र था और जिसका तीर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ेमे तक पहुंचा था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो उसी वक़्त उसकी घात में बैठ गए थे जब वे मुस्लमानों के किसी बड़े सरदार को मारने के लिए चला था। इस के साथ एक जमाअत भी थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस पर हमला किया और उसे क़तल कर दिया। इस के साथ जो दूसरे लोग थे वे सब फ़रार हो गए। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ दस आदमियों की एक जमाअत रवाना फ़रमाई जिसमें हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत सहल बिन हुनीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। उन लोगों ने इस जमाअत को जा पकड़ा जो अज़ के साथ थे और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को देखकर भाग गई थी। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की जमाअत ने इन सबको क़तल कर दिया। कुछ उल्मा ने लिखा है कि इस जमाअत में दस आदमी थे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उनको क़तल कर के उनके सिर लेकर आए जिन्हें बाद में मुख़्तलिफ़ कुओं में डाल दिया गया।

(सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 359 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2008 ई.)

एक क़ौल के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके सिरों को बनू ख़त्मा के कुओं में फेंकने का हुक्म दिया था।

(किताब अल् मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 315 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2003 ई.)

बाक़ी तफ़सील इन-शा अल्लाह आगे वर्णन करूँगा।

ख़ुत्बा सानिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझे किसी ने बताया कि सफ़ों में जब आप खड़े होते हैं तो कंधे से कंधा नहीं मिलाया होता। अब वे दौर गुज़र गया जो कोविड (Covid) का था। सफ़ बनाते हुए कंधे से कंधा मिला के खड़ा होना चाहिए।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 25 July 2024 Issue No. 30

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

परमाणु विकिरण के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए होम्योपैथिक उपचार

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने परमाणु विकिरण से बचने के लिए बचाव के तौर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का नियुक्त होम्योपैथिक नुस्खा निम्नलिखित ढंग से प्रोयोग करने का आदेश फ़रमया तथा फ़रमाया दुआ भी करें की अल्लाह तआला प्रत्येक को अपनी सुरक्षा में रखें। आमीन।

هوالشافی

प्रयोग का ढंग		वृद्ध लोगों के लिए	10 से 15 साल के बच्चों के लिए	10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए	गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए
पहली खुराक		Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पहली खुराक के 7 दिन बाद	दूसरी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
दूसरी खुराक के 7 दिन बाद	तीसरी खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
तीसरी खुराक के 7 दिन बाद	चौथी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
चौथी खुराक के 7 दिन बाद	पाँचवीं खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पाँचवीं खुराक के 7 दिन बाद	छठी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad